



ISSN: 3107-5088 (ONLINE)

ISSN: 3107-4898 (PRINT)

www.cognitivethinking.in

Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies

(An International, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed & ISO Certified Journal)

Vol. 1 & Issue 4 (October - December 2025)

Editor-in-Chief

Dr. Kanwar Pal Singh

पंडित मदन मोहन मालवीय : एक बहुआयामी व्यक्तित्व

1. रवि कुमार, शोधार्थी, रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज मेरठ
2. डॉ० रेनु जैन, शोध निर्देशिका, रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज मेरठ

Article: Received: 15/12/2025, Accepted: 28/12/2025, Published:30/12/2025

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.18139815>



© 2025 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited (<https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>)

सारांश: भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर समय-समय पर अनेक विद्वानों राजनेताओं एवं महान विभूतियों ने जन्म लिया जिनमें से महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक महान विभूतियों में से है पंडित मदन मोहन मालवीय वास्तव में एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने शिक्षा, स्वतन्त्रता, संग्राम, समाज सुधार, पत्रकारिता, वकालत, राजनीति जैसे क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान दिया।

पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 ई० को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में संस्कारित ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता पंडित बृजनाथ और माता मूनादेवी थी इनके पूर्वज मध्य प्रदेश के मालवा के थे परिजन के मालवा से आकर बसने पर ही वे मालवीय कहलाए। अक्षर ज्ञान पांच वर्ष की अवस्था में आरम्भ हुआ। पंडित मदन मोहन मालवीय को हरदेव धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला में भेजा गया। यहीं से उन्होंने प्राथमिक शिक्षा पूरी की। पंडित मदन मोहन मालवीय ने अपनी मैट्रिक परीक्षा म्योर सेंट्रल कॉलेज से उत्तीर्ण की। सन् 1884 में बी०ए० किया। बी०ए० पास करने के बाद मदन मोहन मालवीय को गवर्नमेंट हाईस्कूल में अध्यापक का कार्य मिला।¹ पंडित मदन मोहन मालवीय ने प्रथम बार अपनी सार्वजनिक उपस्थिति दर्ज कराई वह 1886 में ये अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक जो कलकत्ता में हुई, उसने पंडित आदित्य राम भट्टाचार्य के साथ गये। वहाँ पर प्रथम बार अपना भाषण दिया जिसका प्रभाव काफी पड़ा। कलकत्ता से वापस आकर पुनः कुछ दिनों तक अध्ययन कार्य किया। 1889 ई० में कुछ मित्रों के साहयोग से भारतीय भवन पुस्तकालय स्थापित किया। परन्तु मन उसमें भी न लगा। 1891 ई० में वकालत पास करके हाईकोर्ट में कार्य आरम्भ किया इसके लिए दो वर्ष की ट्रेनिंग ली। 1893 ई० में वे इलाहाबाद हाईकोर्ट में एडवोकेट हो गए। 1901 ई० में पंडित मदन मोहन मालवीय इलाहाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड के वाइस चेयरमैन भी चुने गये और इस पद पर 1904 ई० तक रहे। 1902 ई० में प्रान्तीय व्यवस्थापित सभा के सदस्य इलाहाबाद क्षेत्र से चुने गये और उस पद पर कई वर्ष तक रहे।²

समाज की दशा सुधारने के लिए उन्होंने शिक्षा एवं शिक्षा संस्था के लिए प्रयत्न किया। सन् 1904 ई० में पुरुषोत्तम दास टण्डन और अन्य लोगों के साथ गौरी पाठशाला इलाहाबाद में स्थापित किया। आज यह बालिका विद्यालय इण्टर कॉलेज तक बढ़ गया है। मालवीय जी शिक्षा के बिना व्यक्ति के विकास को असम्भव मानते हैं उनका कहना था— शिक्षा के बिना मनुष्य पशुतुल्य होता है। सन् 1898 ई० श्रीमती एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित सेंट्रल हिन्दू कॉलेज ने मालवीय जी का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और फलस्वरूप उन्होंने भी 4 फरवरी, 1916 ई० को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की नींव डाली जो आज विश्व के विश्वविद्यालयों में एक महान स्थान रखता है।³

पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा सम्बन्धी विचार महामना के जीवन की आधारभूमि सनातन धर्म थी और उनके ज्ञान के स्रोत थे— वेद, पुराण तथा उपनिषद्। अतः उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण इस दृष्टिकोण से किया।

महात्मा गाँधी की भाँति मालवीय जी भी शिक्षा के एक उद्देश्य में नहीं, वरन् कई उद्देश्यों में विश्वास करते थे। महामना का उद्देश्य था शिक्षा को मुक्ति का साधन बनाना।

‘सा विद्या या वियुक्तये’। विद्या वह है जो मुक्ति के लिए हो और मुक्ति वह है जो मानव को सभी प्रकार के बन्धनों— आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक से छुटकारा दिलावे। विद्या मुक्ति का माध्यम है। अतः इस विद्या की पद्धति भी स्वतन्त्र होनी चाहिए क्योंकि मुक्ति ही दूसरों को मुक्त कर सकती है।

मुख्य शब्द: अन्धकार, शिक्षा, दलित उत्थान, धर्म सुधार, स्वराज्य—प्राप्ति, स्वभाषा ।

मालवीय जी संस्कृत की इस उक्ति ‘शिक्षा विहिनः पशु’ के समर्थक थे। वे मानते थे कि अशिक्षित व्यक्ति अन्धकार में विश्वास करता है। उसे प्रकाश में लाने के लिए विद्या का प्रचार आवश्यक है। जब तक भारतीय जनता को विद्या का प्रकाश नहीं दिया जाता, उसमें उस चेतना का सर्वथा अभाव रहेगा जो उसे सुविकसित मानव बना सके। हमारी शिक्षा नामक लेख में उन्होंने लिखा है कि क्या हम लोग जो स्वतन्त्रता के पक्षपाती हैं और स्वराज्य पाने की इच्छा रखते हैं थोड़ा—सा स्वार्थ त्याग करके देश में विद्या का प्रचार करने का साहस नहीं कर सके। अगर ग्राम—ग्राम में नहीं.... तो हर एक जिले में चार—पाँच जातीय पाठशालाएँ स्थापित करके वे अध्यापक, जिनको शहर के प्रकाश के सिवाय उस अन्धकार में जाने का कभी अवसर ही नहीं प्राप्त हुआ, वहाँ जाकर विद्या—रूपी सूर्य से स्वराज्य का प्रकाश फैलायें। व्यर्थ को निन्दा अथवा बकवास से न तो किसी देश का कल्याण हुआ न हो सकता है।⁴

पंडित मदन मोहन मालवीय स्त्री—शिक्षा के पोषक थे। स्वामी विवेकानन्द की भाँति मालवीय जी स्त्री—शिक्षा को न केवल अनिवार्य मानते थे बल्कि पुरुषों के समान शिक्षा देने पर भी बल देते थे। उनका मानना था कि एक सुदृढ़ और समृद्ध समाज बनाने के लिए स्त्री और पुरुष का समतुल्य होना जरूरी है। इसलिए भी कि इन दोनों के बिना समाज नहीं चल सकता। समान भाव पैदा हो और योग्य नागरिक जनमें, इसलिए वे वाणी, मन, शरीर, वचनबद्धता और चरित्र पर बड़ा जोर देते थे।

मालवीय कहा करते थे कि उनकी लड़कियाँ गार्गी और मैत्रेयी की तरह विदुषी हो, जो वाल्मीकि के आश्रम को छोड़कर अगस्त्य के विद्यालय में पढ़ने के लिए आ गई थी। 1904 ई० में प्रयाग में बालकृष्ण भट्ट और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन के सहयोग से गौरी पाठशाला की स्थापना की जो आजकल माध्यमिक कॉलेज के नाम से जाना जाता है। जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तो महामना ने लड़कियों के लिए स्वतन्त्र रूप से महिला महाविद्यालय की स्थापना की। जहाँ पर हर विषय की ऊँची शिक्षा के साथ—साथ छात्रों को धर्म की भी शिक्षा दी जाती है।

पंडित मदन मोहन मालवीय हिन्दू और मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। आजकल हिन्दुस्तान में सब ओर उन्नति की पुकार हो रही है, सारे देश में एक हलचल है। हर एक आदमी अपने—अपने विचार के अनुसार उपाय बताता है। कोई कहता है कि बिना धर्म सुधार के देश की उन्नति नहीं हो सकती।

किसी की राय है कि बिना सामाजिक सुधार के हमारी दशा नहीं बदल सकती। महामना की राय में देश और जाति का उद्धार करने के लिए, इसके सुख—संपत्ति और प्रतिष्ठा पाने के लिए, सब प्रकार उन्नति धर्म—संबंधी, सामाजिक, व्यापार संबंधी और राजनैतिक उन्नति जरूरी है। हिन्दुस्तान में अब केवल हिन्दू ही नहीं बसते हैं, हिन्दुस्तान अब केवल उन्हीं का देश नहीं है।

हिन्दुस्तान जैसे हिन्दुओं का प्यारा जन्म स्थान है, वैसा ही मुसलमानों का भी है। ये दोनों जातियाँ अब यहाँ बसती हैं और सदा बसी रहेंगी। पंडित मदन मोहन मालवीय जी का मानना था कि जितना हिन्दू और मुस्लिमों में परस्पर मेल और एकता बढ़ेगी, उतनी ही देश की उन्नति करने में हमारी शक्ति बढ़ेगी। इनमें जितना ही वैर या विरोध रहेगा हमारा देश उतना ही दुर्बल रहेगा। जब ये दोनों एकता के साथ उन्नति की कोशिश करेंगी तभी सब देश की उन्नति होगी। इन दोनों जातियों में और भारतवर्ष की सब जातियों हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी—में सच्ची प्रीति और भाइयों—जैसा स्नेह स्थापित करना हम सबका बड़ा कर्तव्य है इससे देश का बहुत कल्याण होगा। जो हमारी उन्नति नहीं चाहते, वे हमको एक—दूसरे से लड़ाने के लिए प्रयास करते हैं और पंडित मदन मोहन मालवीय हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर थे।⁶

पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने न्यायालयों में हिन्दी का प्रचलन शुरू कराया। हिन्दी संसार में मालवीय जी का हिन्दी में एक अलग स्थान रहा है। संस्कृत के परम विद्वान होते हुए भी ठेठ संस्कृत के शब्दों के अत्यधिक प्रयोग को उन्होंने कभी अच्छा नहीं माना। वह बड़ी ही सरल, सबकी समक्ष में आने वाली हिन्दी लिखते और बोलते थे

इसलिए जनसाधारण को उनकी हिन्दी बड़ी प्रिय लगती थी और उसी सरलता से हिन्दी का विकास और विस्तार हो सका है। हिन्दी की सबसे बड़ी सेवा मालवीय जी ने यह कहा कि उत्तर की अदालतों और दफ्तरों में हिन्दी को व्यवहार-योग्य भाषा के रूप में स्वीकृत कराया। सन् 1890 ई० से ही महामना ने एक जनमत आंदोलन संगठित किया और अपने तर्कपूर्ण आँकड़ों के आधार पर शासकों को आवेदन पत्र दिया। मालवीय जी ने 2 मार्च, 1889 ई० को संयुक्त प्रांत के तात्कालीन गर्वनर सर एंटोनी मैकडोनाल्ड की स्मृति पत्र लिखा था।⁷

1900 ई० में गर्वनर ने मालवीय का आवेदन-पत्र स्वीकार किया और इस प्रकार हिन्दी को सरकारी कामकाज में प्रथम बार स्थान मिला। इस निर्णय से हिन्दी का अदालतों में प्रचलन शुरू हुआ और हिन्दी की स्थिति में भी प्रभावकारी परिवर्तन हुआ और बड़ी इसके फलस्वरूप हिन्दी का प्रचार व प्रसार का कार्य बड़ी तेजी से होने लगा। बाद में स्वप्न में भी यह कल्पना न थी कि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद इस देश में स्वभाषा का तिरस्कार होगा इस प्रकार महामना की प्रिय हिन्दी भाषा का सम्मान कर हम महामना मालवीय जी का सम्मान करेंगे।⁸

महामना जी छात्रों के चरित्र-निर्माण हेतु नियम व अनुशासन पर जो देते थे। उनका सहज स्नेह, वात्सल्य और सभी के हित कामना, स्वतः लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता था। उनके निकट मात्र जाने से एक विशेष प्रकार का परिवर्तन हो जाता था। छात्रों के संगठन को प्रोत्साहन देते थे। किसी नैतिक उद्देश्य के लिए आन्दोलनों में भाग लेने हेतु किसी भी छात्र को जाने से नहीं रोकते थे वे स्वतन्त्र और सन्तुलित जीवन के हिमायती थे। विश्व विद्यालय में शिक्षण और ज्ञानार्जन के अलावा मनुष्यों के चरित्र निर्माण पर अधिक ध्यान दिया जाता था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निकले हुए छात्र अध्यापक, साहित्यकार, वकील, इंजीनियर, समाज-सेवी के रूप में देश – विदेश में चारों ओर छा गए। पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रेरणा और उनके व्यक्तित्व के फलस्वरूप ही यह संभव हो सका है। वे चाहते थे कि छात्र और छात्राएँ अज्ञान के अन्धकार निकलकर ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर उत्तरोत्तर विकास करते हुए उन्नति की ओर अग्रसर हो जब यह विश्वास हो जाएगा कि परमात्मा सभी जग है किसी को तकलीफ न देनी चाहिए।⁹

पंडित मदन मोहन मालवीय दलित उत्थान के प्रवर्णता थे। 1936 ई० के अखिल भारतीय सनातन धर्म महासभा में भाषण देते हुए कहा हम सभी भाई एक पिता के पुत्र थे जैसे पेड़ की चार शाखाएँ हो। अपना-अपना कर्तव्य पालन करते थे। ब्राह्मण धर्म कर्म, क्षत्रिय देश रक्षा, वैश्य वैभव वृद्धि और शूद्र कला-कौशल एवं शूद्र तीन वर्णों की सेवा करते थे। उस समय में राम-लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की तरफ चारों भाई एक-दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होते थे। दलित हमारे भाई हैं। हम उन्हें कष्ट क्यों देते हैं? उन्हें कड़वां शब्द क्यों कहते हैं? दलित घर में सफाई करता है। हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें पढ़ाएँ और स्वच्छ रखें। उनकी गंदगी दूर कराएँ। इस प्रकार से शारीरिक सफाई करके मानसिक स्वच्छता कराएँ। मानसिक स्वच्छता भगवान् के नाम-स्मरण से होती है। रामानुजाचार्य, रामानंद आदि आचार्यों ने शूद्रों को दीक्षा दी और उन्हें अपनाया।¹⁰

पंडित मदन मोहन मालवीय छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। महामना ने हरिजनों के प्रति मानवतापूर्ण भावना अपनाई। मालवीय जैसा कोमल हृदय रखने वाला मनुष्य, जिसके प्राणों का अणु-अणु दया के अमृत से सींचा हुआ था, जो किसी को जरा भी दुख में देखकर रोपड़ा था। दलितों के कष्टों का वर्णन करते-करते जिसकी आँख में आँसु आ जाते थे और जेब से रुमाल निकालने की आवश्यकता पड़ जाती थी। मालवीय जी शायद पहले ऐसे राजनीतिक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने दलितों की चिंता की ओर उन्हें मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। गाँधी से पहले वे दलितों को अपना सामाजिक सहोदर घोषित कर चुके थे।¹¹

पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राजनीतिक और सार्वजनिक कार्यों का पहला मंच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी, जिसके जन्म से अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक वे इसके सक्रिय एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता रहे।¹²

पंडित मदन मोहन मालवीय ऐसे नेता थे, जिन्होंने सर्वाधिक बार कांग्रेस के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया था। मालवीय 1909, 1918, 1932 एवं 1933 ई० में कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। पत्रकारिता के क्षेत्र में महामना का महत्वपूर्ण योगदान है। एक पत्रकार के रूप में उन्होंने वर्ष 1907 में एक हिन्दी साप्ताहिक 'अभ्युदय' की शुरुआत की। 1910 ई० हिन्दी मासिक पत्रिका 'मर्यादा' भी शुरू की। हिन्दी पत्रकारों के वे वास्तव में ही आदिगुरु अथवा कुलगुरु थे। कालाकाँकर के राजा साहब की प्रेरणा पर महामना जी ने हिन्दुस्तान नाम का पहला हिन्दी दैनिक पत्र निकाला था। राजधानी में केन्द्रीय असेंबली में उनके भाषणों की थाक ऐसी जमी थी कि तब वायसराय की काँसिल के सदस्य काँप उठते थे। उनके धारावाही भाषण का एक-एक शब्द बड़ी तन्मयता से सुना जाता था। सन् 1918 ई० में दिल्ली में कांग्रेस का अधिवेशन उसके अध्यक्ष कोकमान्य बाल गंगाधर तिलक चुने गए थे, परन्तु उनके इंग्लैण्ड प्रवास के कारण यह पद महामना जी को सँपा गया।¹³

कांग्रेस के मंच से मालवीय जी ने राष्ट्र के हितों को पुष्ट किया, सरकार की दमननीति का विरोध करते हुए राजनीतिक सुधारों की मांग की। मालवीय जी राजनीतिक, बैद्धिक एवं जुझारू व्यक्तित्व का परिचय दिया तथा सदा संघर्ष करते रहें। उन्होंने प्रान्तीय कौंसिल (1903–1912), भारतीय विधान कौंसिल (1910–1920) और भारतीय लेजिस्लेटिव असेम्बली (1924–30) के निर्वाचित सदस्य की हैसियत से देश के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने महामना के बारे में कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जब से शुरू हुई उसे बनाने और बढ़ाने में मालवीय जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।¹⁴

निष्कर्ष— इस प्रकार हम देखते हैं कि महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी का सम्पूर्ण जीवन लोगों की भलाई, सच्ची देशभक्ति एवं राष्ट्र की उन्नति में व्यतीत हुआ। शिक्षा जो प्रत्येक धर्म, चरित्र और आचरण के सुधार पर बल देती है, को आधार मानते हुए महामना ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे महान संस्थान की स्थापना की। लोगों के मन से जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि संकीर्ण विचारधाराओं को निकालकर विकास के पथ पर अग्रसर किया। महामना एक निस्वार्थ, परिश्रमशील तथा सच्चे समाज सुधारक थे मालवीय जी ने भारत को सांस्कृतिक, नैतिक, शैक्षिक और राजनैतिक ढंग से ऊपर उठाने के लिए प्रयास किया। मालवीय जी विनय एवं अनुशासन की जीती-जागती प्रतिमा थे। संयम उनके जीवन का प्रमुख अंग था। महामना ने छात्रों में स्वानुशासन, विनम्रता तथा शिष्यत्व की भावना पर विशेष बल दिया। पंडित मदन मोहन मालवीय जी का व्यक्तित्व अद्वितीय था। महामना ने पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय संवर्धन में मालवीय जी का योगदान अनन्य है। दिनांक 12 नवम्बर, 1946 को नियति के क्रूर हाथों ने भारत माता के इस महान सपूत का हमसे छीन लिया। महामना की निःस्वार्थ सेवाओं और बहुमूल्य योगदानों के सम्मान स्वरूप उन्हें मरणोपरांत 24 दिसम्बर, 2014 को भारत सरकार ने देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। 2016 ई० में भारतीय रेलवे ने मालवीय जी के सम्मान में वाराणसी-नई दिल्ली 'महामना एक्सप्रेस' शुरू की थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रो० मुकुट बिहारी लाल, महामना मदन मोहन मालवीय, जीवन और नेतृत्व मालवीय अध्ययन संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, 1978 पृष्ठ संख्या-24, 25।
2. महामना मालवीय, लेखक-ब्रजमोहन व्यास तथा मदन मोहन मालवीय, लेखक-सुनीत व्यास, पृष्ठ संख्या-05।
3. सम्पादक डॉ०- बासुदेवशरण अग्रवाल, महामना मालवीय जी लेख और भाषण पृष्ठ संख्या- 20-22।
4. रमाकान्त दूबे, विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री, मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ पृष्ठ संख्या- 229।
5. महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर पृष्ठ संख्या- 72, 73।
6. समीर कुमार पाठक, मदनमोहन मालवीय और हिन्दी नवजागरण भाग-५ पृष्ठ संख्या-21।
7. डॉ० ईश्वरी प्रसाद वर्मा, मालवीय जी के सपनों का भारत पृष्ठ संख्या- 46।
8. वही, पृष्ठ संख्या-47।
9. वासुदेव शरण अग्रवाल - महामना के लेख और भाषण पृष्ठ संख्या-184।
10. महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर पृष्ठ संख्या- 65, 66।
11. कीर्ति देवी, भारतीय शिक्षा दार्शनिक, वैदिक प्रकाशन पृष्ठ संख्या-37।
12. उमेश दत्त तिवारी (1988), भारत भूषण महामना पंडित मदन मोहन मालवीय पृष्ठ संख्या-17।
13. डॉ० ईश्वरी प्रसाद वर्मा, मालवीय जी के सपनों का भारत, दिल्ली सस्ता सहित्य केन्द्र, 1967 पृष्ठ संख्या-85।
14. समीर कुमार पाठक, मदन मोहन मालवीय और हिन्दी नवजागरण पृष्ठ संख्या-6।